Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

"समर्पण हाऊस"
फोरसडॉर्फ जर्मनी
18-8-2014

"विश्वशांती"

सभी पुण्यआत्माओं को मेरा नमस्कार - - -

सामन्य मनुष्य के जिवन में शरीर को प्रधानता होती है, और सामान्य मनुष्य "शरीर के अधीन" रह कर ही जिता है। "समर्पण ध्यान" ध्यान की वह पद्धती है, जो सामान्य से सामान्य मनुष्य को भी "आत्मा के अधीन" रह कर जीना सिखलाती है। इस ध्यान पद्धती से यह इस लीये संभव है, क्योंकी इस पद्धती को विश्वभर की लाखो पवीत्र आत्माओं ने अपनाया है, और अपना रही है। और इन सभी की एक बहुत बडी "सामुहिक शक्ती" इस पद्धती को अपनाकर हमे मिलती है इस पद्धती मे आत्मा को प्रधानता दी जाती है, तो शरीर को बीना कष्ट दिये भी शरीर की प्रधानता कम हो जाती है, यह ठीक वैसा ही है, जैसे किसी लकीर को बीना काटे छोटा करना हो तो उसके आगे एक नयी बडी लकीर खेंच दी जाये आत्मभाव की लकीर साधक जिवन मे जितनी बडी खेंचता है, उतनी ही

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

छोटी उसके "शरीर भाव" की लकीर हो जाती है, और "शरीर भाव" की लकीर छोटी हो जाने पर शरीर से संम्न्धीत समस्याऐ भी छोटी हो जाती है, क्योंकी जिवन की सारी समस्याऐ ही शरीर से ही संमन्धीत होती और इस प्रकार साधक का जिवन सुखी हो जाता है, हम जिवन भर दुसरो को ही जानने का समझने का प्रयास करते रहते है। लेकीन अपने आप को जानने का प्रयास कभी नही करते इस ध्यान पध्दती मे अपने आप को जानना सिखाया जाता है,

यह ध्यान पध्दती सामान्य मनुष्य को भी अंन्तर मुख होना सीखाती है, क्योंकी यह ध्यान पध्दती इस धारणा पर बनी है, की विश्व मे शांन्ती कभी भी किसी पवीज पुस्तक या को शक्तीशाली शस्त्रो से नही आ सकती "विश्वशांन्ती" अगर हम लाना चाहते है, तो उसकी शुरवात हमे "आत्मशांन्ती" से ही करना होगी और "आत्मशांन्ती" प्राप्त करने के लिये प्रथम हम "एक आत्मा" है, यह समझना होगा यह ज्ञान ध्यान मे इस प्रकार से होगा,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

(1) मैंने अलग२ भाषाओ मे जन्म लीया है, फीर भी आज तक मेरी पवीत्रता बनी हुयी है, यह मानना

(२) मैंने अलग२ जातीयो मे जन्म लीया फिर भी मेरी पवीत्रता आज तक बनी हुयी है, यह मानना

(3) मैंने अलग धर्मो मे जन्म लीया लेकीन आजतक मेरी पवीत्रता बनी हुयी है, यह मानना

(4) मैंने अलग२ देशो मे जन्म लिया है। फीर भी आजतक मेरी पवीत्रता बनी हुयी है, यह मानना

(5) मैंने अलग लिंग मे जन्म लीया है, फीर भी मेरी पवीत्रता आजतक बनी हुयी है,

मेरे उपर भाषा जाती धर्म देश लींग का कोई भी कुसंस्कार नही हो पाया है, मै कल भी पवीत्र था। आज भी पवीत्र हु और कल भी पवीत्र रहुँगा। यह मानना मुझ पर स्थान का, काल का, परिस्थीतीयो का कभी कोई बुरा असर नही होता है, मै इन सब से परे रह कर ही शरीर को सलाह देता हु क्या करना चाहिये और क्या नही करना चाहिये क्योंकी "मै एक पवीत्र आत्मा हु।" यह मानना, पवीत्रता ही आत्मा है, और आत्मा ही पवीत्रता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(6) मेरी एक ही भाषा है, "प्रेम" की भाषा

(7) मेरा एक ही धर्म है, "मानव धर्म"

(8) सारा विश्व ही मेरा घर है,

(9) सारे मनुष्य ही मेरे अपने ही है,

(10) न मै कोई पुरुष हु, न मै कोई स्त्री हु.

(11) न मेरा कभी जन्म हुआ है, और न मेरी कभी भी मृत्यु हो सकती है,

(12) न मुझे कभी दुख: हो सकता है, और न कभी सुख हो सकता है, क्योकी मे इन दुख और सुख से उपर हु, क्योकी मै "एक शुद्ध आत्मा हु",

इस प्रकार का आत्मभाव इस ध्यान पद्धती से नियमीत ध्यान करने से साधक को होने लगता है, इसे अपना कर साधक विश्व मे शान्ती लाने का प्रयास अपने स्वंयम मे शान्ती ला कर कर सकता है, आप सभी को खुब खुब आर्शिवाद

आपका
बाबास्वामी